International Journal of Humanities and Social Science Research
ISSN: 2455-2070
Impact Factor: RJIF 5.22
www.socialsciencejournal.in
Volume 4; Issue 6; December 2018; Page No. 150-152

चित्रकूट धाम : पर्यटन केन्द्रों की पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण का अध्ययन

डॉ० जितेन्द्र सिंह
सहायक प्राध्यापक भूगोल, विन्ध्यांचल महाविद्यालय, जिगना, जिला सतना, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश
चित्रकूट का यह भू–भाग बघेल शासकों के कलचुरि, चन्देल एवं बुन्देल शासकों के शासन के अधीन था। इस क्षेत्र में प्राचीन आदि मानव से लेकर वर्तमान बघेल शासकों द्वारा निर्मित ऐतिहासिक स्मारक एवं अवशेष पाये गये है। सर्वाधिक निर्माण कार्य बुन्देल राजाओं एवं बघेल राजाओं द्वारा किये गये है। इन शासकों द्वारा निर्मित मंदिर, गढ़ी, स्मारक आज भी अपने प्राचीन वैभव की गौरव गाथा का वयान करते खड़े है। यहाँ की प्राचीन इमारतों व किलों की पुरातत्व विभाग द्वारा संरक्षित घोषित किया गया है। किसी भी क्षेत्र में पर्यटक जब प्रवेश करता है तो उसके मन में प्राचीन संस्कृति एवं कला को जानने की विशेष अभिलाषा होता हैं। इस हेतु हमें अपनी प्राचीन धरोहरों को पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए सुरक्षित एवं संरक्षित करना होगा।
चित्रकूट धाम में तीर्थ यात्रा के अतिरिक्त तीर्थों की स्थापना में भी अभूतपूर्व नियोजन शैली का उपयोग किया गया था, इसलिए तीर्थों की स्थापना ऐसे स्थानों पर की गई जहाँ प्राकृतिक विशिष्टता तो हो ही लेकिन कैसी भी भौगोलिक परिस्थिति में वे क्षतिग्रस्त न हो सके। निश्चय ही यह हमारे पूर्वजों की भूगोल की उत्तम जानकारी का परिचायक है।

मूल शब्द : चित्रकूट धाम, पर्यटन केन्द्र, पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक, सांस्कृतिक, संरक्षण।

प्रस्तावना
पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण प्राकृतिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्रों में पर्यावरण संरक्षण की अत्यधिक आवश्यकता है। पर्यटक की रुचि प्राकृतिक सौन्दर्य से भरपूर स्थलों को देखने में अधिक होती है। पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए यह आवश्यक है कि पर्यटन स्थल के विशिष्ट चरित्र को नष्ट नहीं होने दिया जाये। संयुक्त राष्ट्र के स्टाकहोम सम्मेलन में भी पर्यावरण की गुणवत्ता में सुधार की आवश्यकता पर बल दिया गया है।[1–3] इसमें विश्व सांस्कृतिक विरासत के विस्तृत पैरामीटर के भीतर 'संरक्षण नीति' अपनाने की सिफारिश की गई है। 1980 में मनीला में हुए 'विश्व पर्यटन सम्मेलन' में भी पर्यटन विकास के साथ–साथ पर्यावरण संरक्षण पर बल देने की बात कही गई थी। संयुक्त राष्ट्र ने अन्तर्राष्ट्रीय यात्रा एवं पर्यटन पर 1963 में रोम में हुए सम्मेलन में पर्यावरण संरक्षण की जिम्मेदारी की ओर ध्यान देने की बात कही गई थी। अपने देश तथा प्रदेश में हैरिटैज होटल सांस्कृतिक पर्यावरण संरक्षण की नीति का एक उदाहरण है। चित्रकूट क्षेत्र में स्थित विभिन्न धार्मिक स्थलों व स्मारकों को इस तरह नीति अपना कर सांस्कृतिक पर्यावरण संरक्षण की योजना प्रस्तावित है। प्राकृतिक पर्यावरण संरक्षण हेतु पर्यटन केन्द्रों पर बढ़ते हुए आवास को नियंत्रित करने एवं परिसर ब्यूटी उपलब्ध कराने के लिए आकर्षक व सुन्दर वृक्षों का वृक्षारोपड़ प्रस्तावित है। चित्रकूट धाम के प्रमुख सड़क एवं रेल मार्ग जो पर्यटन केन्द्रों को जोड़ते है उन सड़क व रेलमार्ग के किनारों पर वृक्षारोपड़ की योजना प्रस्तावित है।[4–6]
वर्तमान समय में चित्रकूट क्षेत्र के आस–पास स्थित ईटा के भट्ठे एवं चूना भट्ठा तथा क्रेशर उद्योगों द्वारा अत्यधिक पर्यावरण प्रदूषण किया जा रहा है। यहाँ पर स्थापित फैक्ट्रियों एवं चूना भट्ठों द्वारा इतनी अधिक मात्रा में धुंआ विसर्जित किया जाता है। आवश्यकता इस बात की है कि इस क्षेत्र को प्रदूषण रहित बनाया जाय। इस हेतु निम्न योजनायें प्रस्तावित है–

- आमोद–प्रमोद के विकास हेतु अनुसुइया आश्रम के आस–पास स्थित जल में मछलियों का दृश्य अत्यन्त रमणीय है। अतः मछलियों के आखेट में रोक के साथ–साथ मछलियों के लिए उपयुक्त वातावरण सृजित करने की आवश्यकता है।
- पर्यटन स्थलों पर निर्माण के समय यह ध्यान रखना होगा कि प्राकृतिक परिवेश कम से कम प्रभावित हो एवं आस–पास के खुले क्षेत्रों में बांगों का विकास करना होगा।
- गुप्त गोदावरी, हनुमान धारा एवं स्फटिक शिला के आस–पास क्षेत्रों में सुन्दर घाटों का निर्माण कर हरित वाटिका के विकास की योजना प्रस्तावित है।
- कामदगिरि के पूर्व की ओर सतुगुरू सेवा ट्रस्ट की भूमि के पश्चिमी सीमा की भूमि पर औषधि उद्यान आरोग्यधाम की भाँति विकसित किये जाने का प्रस्ताव है।
- रजौला ग्राम में सिरसा वन के निकट मानस उद्यान हेतु 2.9 हेक्टेयर भूमि आरक्षित की गई है इसका विस्तार शीघ्र किया जाना चाहिए।
- पर्यटन स्थल को जोड़ने वाले मार्गो के किनारे छायादार वृक्षों का वृक्षारोपड़ प्रस्तावित है।
- कर्मचारियों ओर पर्यटकों को आस–पास की प्राकृतिक और सांस्कृतिक पर्यावरण की जानकारी देने के लिए व्याख्यात्मक कार्यक्रम प्रस्तुत किये जाने चाहिए।
- चित्रकूट क्षेत्र में मेले एवं उत्सव के बाद पर्यटक कैम्पों को खाली करते समय पर्यटकों को स्वच्छता सम्बन्धी निर्देश पूर्व में ही सुनिश्चित कर दिये जाने चाहिए जिससे उनका कड़ाई से पालन किया जा सके।
- पर्यटक कागजों एवं पैकिटों को सुरक्षित स्थान पर जलायें। रद्दी कागजों और पारिस्थितिक क्षरण वाली वस्तुओं को जमीन में गाड़ दें। यदि अन्य लोग द्वारा भी गन्दगी फैलाई गई हो तो उसे साफ करने में सहयोग करें।
- नदियों एवं नालों के जल को स्वच्छ एवं प्रदूषण से मुक्त रखें तथा साबुन या डिटरजेंट पाउडर का प्रयोग बहाव में करें। यदि शौचालय की उपयुक्त व्यवस्था उपलब्ध न हो तो कम से कम पानी के बहाव से तीस मीटर से अधिक दूरी पर शौच कि लिए जायें ताकि ऐसे स्थानों पर गन्दगी से बचा जा सके।
- पर्वतीय पर्यटन स्थलों पर पर्यटकों को चाहिए कि वे पौधों, पेड़ों की जड़ों अथवा कलमों को न उखाड़े और न ही उन्हें नष्ट करें अन्यथा प्राकृतिक सौन्दर्य धीरे–धीरे क्षीण होता चला जायेगा।

- विभिन्न पर्यटन स्थलों पर वहाँ के रीति–रिवाजों का आदर करें और स्थानीय संस्कृति का संरक्षण करें ताकि और अधिक पर्यटन उसके प्रति आकर्षित हो।
- विभिन्न धार्मिक पर्यटन स्थलों पर पवित्र स्थानों का पर्यटकों को सम्मान एवं संरक्षण करना चाहिए तथा धार्मिक वस्तुओं के साथ छेड़–छाड़ न करें। धार्मिक स्थल में घूमने के दौरान जूते एवं वर्जित सामग्री को उचित स्थान पर सुरक्षित रखकर घूमने जायें। धूम्रपान एवं मद्यपान कर वातावरण को प्रदूषित न करें।
- पर्यटकों को चाहिए कि भिखारियों को भीख देकर उन्हें प्रोत्साहित न करें बल्कि उन्हें काम करने के लिए प्रेरित करें।
- पर्यटन स्थलों पर पर्यटकों को चाहिए कि वे ढीले व हल्के कपड़े पहनें, भड़काऊ व तंग वस्त्रों को प्राथमिकता न दें। बांह में बांह डालकर चलना और खुले आम चुम्बन आदि की घटनाओं से सामाजिक एवं सांस्कृतिक वातावरण को प्रदूषित न करें।
- पर्यटन स्थलों पर आजकल अधिकांश कम्पनियाँ अपने उत्पादों की बिक्री में वृद्धि के लिए अश्लील एवं भद्दे विज्ञापनों का सहारा लेती है जिससे पर्यावरण स्थल की प्राकृतिक सौन्दर्यता तो नष्ट होती ही है साथ ही सांस्कृतिक प्रदूषण को भी बढ़ावा मिलता है।

सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों की संरक्षण की योजना

सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों की ह्रास की बात कही गयी है। डॉ. एस.पी. काला जैसे लोग 'विपरों' (विध्वंसक पर्यटन रोको) नामक सामाजिक आन्दोलन चलाये है, निश्चय ही उनकी यहाँ चिन्ता सामाजिक, सांस्कृतिक मूल्यों से जुड़ी हुई है। इस प्रसंग में – डॉ. आर.एस. डेसमेन का विचार हमारी चिंता को बढ़ता है।[1,6] डेसमेन का कहना है कि मानव पारिस्थितिकी ने लोगों को तीन खण्डों में बाँट दिया है। इकोसिस्टम पीपुल, बायोस्फीयर पीपुल और इकोलोजिकल रिफ्यूजी। जमीने से गहरे जुड़े हुए लोगों को उन्होंने इकोसिस्टम मानव माना है। वे जो तमाम संसाधनों का अपने हक में उपभोग करते है, वे बायोस्फीयर मानव कहलाते है तथा वे जो पारिस्थितिकी में हुए जटिल परिवर्तनों को झेल नहीं पा रहे है और अपने स्थान में खदेड़ दिये जाते है और मारे–मारे भटकते है उन्हें पारिस्थितिकी विस्थापितकी विस्थापित मानव कहते है।

समाज का सुखी वर्ग समस्त संसाधनों का उपभोग करें और अपने उपभोग के मूल्य में वह एक समाज के समस्त संसाधन को निगल जायें तथा दूसरे एक वर्ग को सर्वथा विस्थापित कर दें वह बड़ा खतरनाक खेल होगा। प्रो. दुबे का यह विचार है कि अपसंस्कृतियाँ हर युग में उभरी है केवल यह कहकर इस समस्या से छुटकारा नहीं पा सकते, ऐसी स्थिति में प्रश्न उठता है तो तब किया क्या जायें।

सबसे पहली आवश्यकता पर्यटकों तथा मेजवान क्षेत्र दोनों के लिए एक आचार संहिता बनाई जाये, दूसरा पर्यटन को पुनः परिभाषित किया जाना चाहिए जिसमें पर्यटक स्थल के सामाजिक, सांस्कृतिक पर्यावरण संरक्षण को केन्द्र में रखना होगा तथा शासन को इस दिशा में सार्थक प्रयास करना होगा।

योजना

पर्यटकों को दो वर्गों में विभक्त किया जा सकता है – (1) विदेशी पर्यटक (2) घरेलू पर्यटक। अध्ययन के दौरान पाया गया कि उन क्षेत्रों में विदेशी पर्यटकों का आगमन अधिक होता है जहाँ पर्यटकों के लिए विशेष पैकेज प्रस्तुत किये जाते है। इस हेतु चित्रकूट मेला, रामायण मेला और झूला महोत्सव जैसे आकर्षक पैकेज आरंभ कर विदेशी पर्यटकों को यहाँ के दर्शन हेतु आकर्षित किया जा सकता है। घरेलू पर्यटकों को प्रोत्साहन हेतु आकर्षक स्थलों के लिए कम समय वाले सस्ते टूर प्रोग्राम प्रस्तुत किये जाने चाहिए। साथ ही स्थानीय लोक कलाओं एवं लोक संस्कृति के उत्सव को निश्चित समय पर आयोजित कर घरेलू पर्यटकों को आर्कषित किया जा सकता है।[2–4]

सांस्कृतिक साहित्यिक एवं कला के विकास की योजना

चित्रकूट क्षेत्र की अपनी लोक संस्कृति का आकर्षण विशेष त्योंहारों, मेलो और उत्सवों में देखने को मिलता है। लोक संस्कृति के प्रदर्शन हेतु वर्ष में दो–दो बार लोक संस्कृति समारोहों का आयोजन किया जाना चाहिए। इस हेतु कलाकारों का चयन ग्रामीण स्तर पर प्रतियोगिता आयोजित कर किया जाना चाहिए। उपरोक्त उत्सवों का पर्याप्त प्रचार–प्रसार टी.व्ही., रेडियों, समाचार पत्रों एवं पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से होना चाहिए। आकर्षक झलक प्रचार में प्रभावी भूमिका का निर्वाहन कर सकती है।

समूहगत पर्यटक योजना

चित्रकूट क्षेत्र वैविध्यपूर्ण प्रकृति छटा, विभिन्न जाति धर्म के लोग, अनुपम नैसर्गिक सौन्दर्य, वनस्पति एवं जीवों की विविधता, रंग बिरंगे पक्षी, टेढ़ी–मेढ़ी सरिताओं द्वारा निर्मित सुरम्य जल प्रपात, अद्वितीय ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक धरोहर विभिन्न जनजातियाँ, अजीवों गरीब लोक संस्कृति, लोकाभूषण, लोकरंजन, पुरातात्विक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्व के स्थल इसे आदर्श पर्यटन प्रदेश की छवि देने में समर्थ है। किन्तु आधारभूत सुविधाओं की कमी, अधिक महगे वाहन, सड़क मार्गों की जर्जर हालत, पर्यटन केन्द्रों पर लूट, वाहनों में सामंजस्य का अभाव, पर्यटन केन्द्रों में आवास एवं रेस्टोरेन्ट की उचित व्यवस्था का अभाव, सुरक्षा का अभाव, प्रशिक्षित कर्मचारियों की कमी, मंहगे वाहन, सस्ती आवासीय सुविधाओं की कमी आदि की कठिनाइयों के कारण पर्यटक चाहते हुए भी दर्शन का लाभ नहीं उठा पाते। क्षेत्र में विविध रुचि के पर्यटकों को ध्यान में रखते हुए आकर्षक टूर पैकेज प्रोग्राम प्रस्तुत किये जाये तो पर्यटन का विकास संभावित है।[3–5] यहाँ पर कुछ टूर पैकेज प्रोग्राम प्रस्तुत किये जा रहे हैं जो विविध रुचि के पर्यटकों को ध्यान में रखकर तैयार किये गये है–

सारणी 1: चित्रकूट क्षेत्र में समूहगत पर्यटक योजना

क्र.	पर्यटक स्थल का नाम	समय अवधि	ठहरने के स्थान
1.	चित्रकूट, पन्ना राष्ट्रीय उद्यान, खजुराहों, केन घड़ियाल अभ्यारण्य, रीवा एवं मैहर	5 दिवस	चित्रकूट, सतना, खजुराहों
2.	चित्रकूट, कालिंजर, झांसी	3 दिवस	चित्रकूट एवं झांसी
3.	चित्रकूट, रामवन, रीवा के प्रपात, गोविन्दगढ़, बाणसागर डैम	4 दिवस	रीवा, सतना एवं चित्रकूट
4.	खजुराहों, चित्रकूटक, बांधवगढ़	5 दिवस	खजुराहों, चित्रकूट, बांधवगढ़
5.	खजुराहों, पन्ना, चित्रकूट, बांधवगढ़	5 दिवस	पन्ना, खजुराहों, बांधवगढ़
6.	चित्रकूट, खजुराहों, रानी दुर्गावती अभ्यारण्य, भेड़ाघाट, मैहर	5 दिवस	खजुरहों, जबलपुर, सतना, चित्रकूट

निष्कर्ष

समग्र रूप से अध्ययन एवं विश्लेषण करने के पश्चात् हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते है कि पर्यटन उद्योग की प्रतिस्थापना एवं उसको व्यावसायिक स्वरूप प्रदान करने के लिए यहाँ प्रस्तुत सुझावों के अनुरूप कार्य किये जाये तो सरकार एवं पर्यटन विभाग लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है।

प्राचीन तीर्थ यात्रा के नियोजन की यही प्रणाली वर्तमान समय में पर्यटन के नियोजन में भी मुख्यतः अपनाई जा रही है। वास्तव में

धीरे–धीरे तीर्थ यात्रायें चित्रकूट क्षेत्र में एक धार्मिक भावना पर आधारित यात्रा का व्यापार बन गई। यात्रा मार्ग पर छोटे–छोटे कई तीर्थ स्थापित किये गये जो कि तीर्थ यात्रियों से भेंट, पूजा आदि लेने के लिए लालायित रहते। इस प्रकार प्राचीन काल में ही तीर्थ यात्रायें चित्रकूट क्षेत्र का महत्वपूर्ण आर्थिक आधार बन गई थी।

प्राचीन धार्मिक यात्राओं के नियोजन में आर्थिक व सांस्कृतिक लाभ प्राप्त करने के साथ–साथ नियोजन की ऐसी प्रणाली भी अपनाई गई थी जिससे कि पर्यावरण तथा सांस्कृतिक क्षति किसी भी प्रकार यहाँ के समाज को न पहुंचे। इसलिए धार्मिक यात्राओं में ऐसे कट्टर नियम भी शामिल कर लिये गये थे जिनसे कि अप्रत्यक्ष रूप में पर्यावरण व संस्कृति को कोई क्षति नहीं पहुंचती थी। कुल मिलाकर यह नियोजन भी एक ऐसी प्रणाली थी जिससे यहाँ के समाज को अधिक से अधिक लाभ और कम से कम हानि होती थी। भारी भीड़ आने के कारण यात्रा मार्गों पर होटल, रेस्तरां, रेस्ट हाउस या आवास आदि का व्यापार बहुत पनपा है जिससे कि स्थानीय लोगों को भारी संख्या में रोजगार मिला है। संकुचित विचारधाराओं (छुआछूत, ऊँच–नीच आदि) व बाह्य आडम्बरों का ह्रास हुआ है जो कि वर्तमान पर्यटन की महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

सन्दर्भ

1. सिंह, बी.पी. मध्यप्रदेश में पर्यटन विकासः समस्यायें एवं संभावनायें, शोध परियोजना प्रतिवेदन 2004, यू.जी.सी. मध्य क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल।
2. सिंह, अरुण : विन्ध्य प्रदेश के धार्मिक पर्यटन केन्द्रों का एक भौगोलिक अध्ययन, शोध प्रबन्ध, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, पृ. 343।
3. हरिमोहन : संस्कृति पर्यावरण एवं पर्यटन, शोध पत्र पर्यटन के विविध आयाम पुस्तक में प्रकाशित, पृ.29।
4. सहाय, शिवस्वरूप : पर्यटकों का देश भारत, मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 202।
5. नेगी, जगमोहन : पर्यटन एवं यात्रा के सिद्धांत, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 96।
6. सिंह, बी.पी. एवं सिंह, सुमन्त : मध्यप्रदेश में पर्यटन, आदित्य प्रकाशन, बीना।